॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते॥ (अथर्व. 20/121/2)

भूमि–आकाश कहीं भी तुझ सा न कोई पैदा हुआ है, न होगा।

वर्ष ३२, अंक २२ एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार २५ मई, २००९ से ३१ मई, २००९ तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई–मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आयोजित

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का समापन एवं दीक्षान्त समारोह

दिनांक :– रविवार 31 मई 2009
प्रातः 10.00 बजे

स्थान :– एस. डी. प० स्कूल, निकट फर्निचर मार्केट,
कीर्ति नगर, नई दिल्ली– 110015

आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को आशीर्वाद देने दल बल सहित अवश्य पधारें

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे बसों/आरटीवी द्वारा समापन समारोह में अपने बच्चों सहित आर्यवीर दल के नौजवानों के क्रान्तिकारी व्यायाम एवं बौद्धिक प्रदर्शन देखने के लिए अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर अपनी युवाशक्ति को अपना आशीर्वाद प्रदान करें जिससे आर्यवीरों को और मनोबल प्राप्त हो तथा आपके बच्चों में भी आर्यवीर दल तथा उसके कार्यों के प्रति रूचि जागृत हो।

❖ निवेदक ❖ वीरेन्द्र आर्य (संचालक) सुन्दर आर्य (महामन्त्री) जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष) जितेन्द्र खरबन्दा (अधिष्ठाता)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

ब्र० राजसिंह आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री) अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष)

उप प्रधान : सर्वश्री सोमदत्त महाजन, सत्यपाल भाटिया, हरबंस लाल कोहली, ओम प्रकाश आर्य।

उपमन्त्री : सर्वश्री अरुणप्रकाश वर्मा, सुखबीर सिंह आर्य, शिवशंकर गुप्ता, सुश्री गीता झा, सत्येन्द्र आर्य, एवं श्री हरीश बत्रा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 – हनुमान रोड, नई दिल्ली–110 0 0 1

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न
बैठक में लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक शनिवार 23 मई, 09 को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों पर चर्चा उपरान्त विशेष निर्णय लिए गए जो इस प्रकार हैं :–

1. दिल्ली में विश्व स्तरीय वैदिक सन्दर्भ पुस्तकालय स्थापित किया जाएगा।
2. भजनोपदेशकों की कमी को पूरा करने के लिए भजनोपदेशक प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना होगी दिल्ली में।
3. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों हेतु विशाल व्यावसायिक संस्थान खोलने की प्रक्रिया शुरु : समिति का गठन।
4. दिल्ली के आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं का इतिहास लेखन का कार्य आरम्भ होगा।
5. विभिन्न क्षेत्रों में आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए विशिष्ट रूप से किए गए कार्यों हेतु महानुभावों का सम्मान होगा।

– महामन्त्री

पुनः भारत के प्रधानमन्त्री बनने पर
डॉ. मनमोहन सिंह जी
को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

सार्वदेशिक सभा प्रकरण :
जानें वर्तमान परिस्थिति को!

साप्ताहिक आर्यसन्देश के माध्यम से आर्यजनता को हम सार्वदेशिक सभा प्रकरण से निरन्तर अवगत कराते रहे हैं। काफी लम्बे समय से इस सम्बन्ध में आर्यसन्देश में लेख प्रकाशित नहीं किया गया। इस समय आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसलिए इस जानकारी लेख को लिखने का प्रयास किया जा रहा है।

आपको स्मरण होगा कि हाई कोर्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा का चुनाव कराने हेतु तीन रिटायर्ड जजों की समिति का गठन किया गया था। उस समिति ने सार्वदेशिक सभा कार्यालय से सार्वदेशिक सभा के तीन पक्ष मानते हुए सुनवाई आरम्भ कर दी थी। संक्षेप में – अलग–अलग सुनवाइयों में जो कुछ हुआ, उसे यहां दिया जा रहा है –

1. तीनों पक्षों से यह जानकारी मांगी गई कि कुल कितनी सभाएं सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध हैं। तीनों की जानकारियों के अनुसार सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध 24 सभाएं पाई गई, इस विषय में कोई विवाद शेष नहीं रहा।

2. अगले चरण में यह जानकारी मांगी गई कि तीनों पक्ष यह बताएं कि उनके अनुसार उपरोक्त 24 प्रान्तीय सभाओं के प्रधान, मन्त्री व पंजीकृत कार्यालय कौन–कौन से हैं?

लोकतान्त्रिक चुनाव की प्रक्रिया को रोकने की नियत से डाला गया श्री विमल वधावन का प्रार्थना पत्र हाईकोर्ट द्वारा पहली ही सुनवाई में निरस्त

आखिर क्यों नहीं होने देना चाहते निष्पक्ष चुनाव

– शेष पृष्ठ 4 पर

दर्शन व्याख्या - 8

न्याय दर्शन का महत्त्व

गतांक से आगे :–

प्रत्येक मनुष्य दुःखों से छुटकारा पाकर जीवन को सुख–शान्ति मय बनाकर उत्कर्ष प्राप्त करना चाहता है एवं अन्ततः मोक्ष की कामना करता है किन्तु पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के बिना यह सम्भव नहीं और पदार्थों का यह यथार्थ ज्ञान प्रत्यक्ष–अनुमान–उपमानादि प्रमाणों की सम्यक् जानकारी से सम्भव है। प्रत्यक्षादि प्रमाणों की यह जानकारी एवं पदार्थों का यथार्थ ज्ञान (तत्त्वज्ञान) दर्शन शास्त्र, विशेषतः न्याय दर्शन के अध्ययन–चिन्तन और मनन से ही प्राप्त किया जा सकता है। न्याय दर्शन के भाष्यकार वात्स्यायन मुनि के अनुसार :–

प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।।

– न्यायदर्शन, 1–1–1(वात्स्यायन भाष्य)

अर्थात् आन्वीक्षिकी (न्यायदर्शन) सभी विद्याओं की दीपक अर्थात् प्रकाशक है, सारे कर्मों की साधक (उपाय) है एवं सभी धर्मों की आश्रय है। यहां 'धर्म' शब्द का प्रयोग कर्त्तव्य–कर्मों के अर्थ में किया गया है। कहने का आश्रय यह है कि न्याय दर्शन का अध्येता सभी विद्याओं में पारंगत हो जाता है, सभी कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकता है और कर्त्तव्याकर्त्तव्य के विवेक से अपने आचरण को अनुशासित कर जीवन को धन्य बना सकता है। कौटिल्य के :अर्थशास्त्र' में भी उक्त श्लोक है।

अन्य दर्शनों के समान न्याय दर्शन भी व्यक्ति को कर्मों के बन्धन से छुड़ाकर मोक्षोन्मुख कर सकता है। सम्यग्दर्शन (यथार्थ ज्ञान) के इस महत्त्व को निम्नांकित श्लोक में भलीभांति निदर्शित किया है :–

समयग्दर्शन सम्पन्नः कर्मभिर्न निबध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।।

अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्पन्न व्यक्ति कर्मों के बन्धन में नहीं पड़ता और दर्शन (तत्त्वज्ञान) से रहित व्यक्ति बारम्बार जन्म–मरण के बन्धनों को प्राप्त करता है। इस प्रकार सभी विद्याओं के यथार्थ ज्ञान, सभी कर्मों में दक्षता, कर्त्तव्याकर्त्तव्य के विवेक, सांसारिक बन्धनों से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति आदि के साधक के रूप में न्याय दर्शन का बहुत महत्त्व है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्) , बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली

क्रमशः

Questions & Answers

Meaning of Bhagwan

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: Why do not your good self convert all your books, pravachan convert in other regional language? **Dhanesh Padhya**

Ans.: Your views are highly appreciated please. I shall deeply think over it, you please try to make contact with me and I will inform you when I will be free to do such a pious deed.

Q.: Could you describe that what is the meaning of bhagvan, devta and rishi and describe the difference also? **Virender Singh**

Ans.: BHAGWAN: The meanings are always based on authentic knowledge of Vedas/shastras and not based on self creation. In Atharvaveda mantra 3/16/5 the meaning of Bhagwan is God. The literal meaning of Bhagwan is glory, fortune, wealth, supremacy, grandeur, majesty, greatness, etc., etc. So meaning of Bhagwan is, he who has all such divine qualities. The another meaning of Bhagwan is also "a Yogi" who after worshipping God by yoga philosophy and by studying Vedas etc., attains all such divine qualities but such Yogi can not create the universe. So a Yogi is not Braham but equivalent to Braham. and is addressed as Bhagwan. 'Dhan' + 'wan' = 'Dhanwan'. 'Dhan' means assets and 'wan' means holder, so 'dhanwan' means who holds assets, money etc., similarly 'Bhag'+ 'wan' = 'Bhagwan'. 'Bhag' means as mentioned above i.e., glory, etc., etc. So he who holds glory etc., etc., he is called Bhagwan and he is a Rishi/Yogi. So Sri Ram and Sri Krishna and any Rishi Muni like Pipplad, Vyas, etc., can be called Bhagwan. DEVTA: There are five alive devtas- mother, father, atithi, Acharya and God. Devta means one who gives something. Mother gives birth, father nurses etc., atithi gives knowledge, Acharya gives full knowledge to attain salvation and Almighty God has given everything to human beings. Rishi means mantradrishta i.e., he who by studying Vedas and practising Ashtang yoga philosophy attains Samadhi and sees Ved mantras within him.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

वैदिकवाङ्मये विज्ञानतत्त्वानि

गतांकेन क्रमशः –

पूर्णमिदं पृथिवीसूक्तं प्रमाणम् यत् अस्माकं वैदिकवाङ्मये ऊर्जायाः प्रभूतः स्रोतः विद्यते। अग्निस्तु ऋग्वेदे ऊर्जायाः सर्वोत्कृष्टतमं निदेशनं विद्यते एव। अग्नि एव समस्तं ब्रह्माण्डं परिचालयति वेदेषु निखिलं एव कर्म यज्ञात्मकं भवति। अग्निश्चादित्यश्च सर्वसृष्टिमूलौ अतएव तत्र अग्निः विज्ञानस्य अतिमहत्त्वं दृश्यते।

अस्माकं वैदिक वाङ्मये शस्त्रविज्ञानस्यापि चर्चा विद्यते यतो हि वज्रः, धनुः, सेनायाः, सैन्यव्यूहस्य, शत्रुदुर्गोच्छेदनस्य विभिन्नानां शस्त्रास्त्राणाच्चोलेखः विद्यते। युद्धविज्ञानं तु इन्द्रसूक्ते दाशराज्ञयुद्धप्रकरणे च द्रष्टव्यः।

एवं वेदेषु विविधेषु क्षेत्रेषु प्रभूतान विज्ञानतत्त्वानि लभ्यन्ते इति नात्र सन्देहः। विकित्साविज्ञानक्षेत्रे औषधिविज्ञानक्षेत्रे आयुर्विज्ञान–क्षेत्रे तु पूर्णमथर्ववेदमेव प्रमाणम् भेषजकृते एव अथर्ववेदं भौषज्यवेदमपि उच्यते। अथर्ववेदे रोगाणां तथा च तन्निदानसम्बन्धिनी विविधा औषधय विद्यन्ते। ऋग्वेदेऽपि चिकित्सासम्बधितत्त्वानि विराजन्ते। विज्ञानक्षेत्रे कालचक्रस्य नियामकः 'वाचः' 'घड़ी' अति नाम्ना यत् यत्र कालं सूचयति, वैदिकवाङ्मये कालचक्रस्य नियामकः सूर्य एवास्ति यतो हि ऋग्वेदे यदा हि दिवसे जनाः स्वे–स्वे कर्मण्यभिरताः सन्त्येव तस्मिन्नेव मध्ये सूर्यः स्वतमसाच्छन्नं विस्तीर्य एव कर्माणि अवरुध्यति। ऋग्वेदे द्रष्टव्यमिदम्–

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्याकर्तोविततं संजभार।
यदेदयुक्तः हरितः सधस्थाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।। (ऋग्वेद 1/115/4)

सूर्यस्य सप्तरश्मयः प्राणिनां अरोग्यं वहित – (शांख्यायन आरण्यक 1/7/1) औषधिविज्ञानक्षेत्रे आयुर्विज्ञानक्षेत्रे तु पूर्णमेवाथर्ववेदेमेव प्रमाणम्। दीर्घायु–प्राप्त्यर्थं बहवः सूक्तय अथर्ववेदे प्रमाणं तेषां निदर्शनमेव केवलमत्र प्रस्तूयते। अपां भेषजमत्र वर्तते। सुखपूर्वकं प्रसवं भूयात् एतस्मिन् विषये प्रार्थना कृता। यक्ष्मनाशनम्। रुधिरस्रावस्य निवृत्तये धमनीबन्धनम्। हृदयघातम श्वेतकुष्टनिरोधः रोगोपचारश्च। ज्वरनिरोधः रोगोपचारश्च। मेधावर्धनम्बुद्धिवर्धनं वा उपचारः। चित्तविभ्रमोपचारः। क्लीबत्वनिरोधः रोगोपचारश्च।

सर्पच्छेदनोपचारः विषनिरोधश्च। गण्डमालाचिकित्सा। दुःस्वप्ननाशनम्। प्राणास्त मे न निर्गच्छन्तु जीवेम शतायुः इति। दुःखमोचनम्। रोगनिवारणम्। रोगशान्तिः। बलपुष्ट्यर्थं रोहिणीवनस्पतेरुपयोगः। मृत्युसस्तरणोपायाः। कृमिनाशनम्। गर्भाधानम् (अथर्व 5/25/1–13)। गर्भदोष निवारणम् (अथर्ववेद 8/6/1–25)। गर्भरक्षणम् (अथर्ववेद 6/81/1–3)। पुंसवनम् (अथर्ववेद 6/11/1–3)। यस्य गर्भधारणं न भवति तस्य गर्भधारणार्थमुपायाः (अथर्ववेद 6/17/1–4)। केशक्षयनिरोधः केशवर्धनञ्च (अथर्ववेद 6/21/1–3/67)। कुष्ठरोगात् रक्षणार्थम् (अथर्ववेद 6/95/1–3)। चतुष्पदेभ्यश्च औषधायः (अथर्ववेद 6/59/1–3)। अन्याश्चिकित्साश्च (अथर्ववेद 6/96/1–3) विद्यन्ते। एवं परिलक्ष्यते यदस्माकं वैदिकवाङ्मये बहूनि विज्ञानतत्त्वानि सन्निहितानि सन्ति। एवं वैदिकवाङ्मये प्रभूतं वैज्ञानिकं चिन्तनं विद्यते। एवं वेदाध्ययनं जीवनं पावयति। चिन्ताकुलं जगत् चिन्तायास्तार्यते, लोकानां विविधाः समस्याः निवारयति, जीवनमुन्नयति, सद्भावांश्च प्रेरयति, किञ्च सर्वमेव भारतीयसंस्कृतिसभ्यताः वाङ्मयाः वेदमेव समुपजीव्यं संराजन्ते। अत एवास्माभिः सर्वं वैदिकवाङ्मयं किञ्च सर्वं संस्कृत साहित्यमवश्यमेवानुशीलनीयम्। अतः परम् ऋग्वेदस्य विश्वेदेवासूक्तमन्त्रेण सह स्ववाक्यं विरमामि –

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः अदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेः असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे–दिवे।।

(ऋ० 10/89/1)

– डॉ० हरीश्वर दीक्षित, अध्यक्ष संस्कृत विभाग
राजा हरपालसिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)
सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये
प्राप्त करें मात्र 1500/- में
डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।
प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में बालकों की शिक्षा–दीक्षा से सम्बन्धित सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए हैं। स्वामीजी के विचार में बच्चों के निर्माण में उन्हें ज्ञानवान बनाने में माता–पिता और आचार्य इन तीनों का बड़ा योगदान होता है। अपने विचार की पुष्टि में वे शतपथ ब्राह्मण का वचन उद्‌धृत करते हुए लिखते हैं कि –

'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।' "वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य है, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों।"

स्वामी जी इन तीनों शिक्षकों में से भी माता का अधिक योगदान मानते हुए लिखते हैं – "जितना माता से सन्तानों को उपेदश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर जितना प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता इसलिए मातृमान् अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।" स्वामीजी की उपरोक्त पंक्तियों से यही बात स्पष्ट होती है कि बालकों पर माता–पिता तथा आचार्य का काफी प्रभाव पड़ता है। विशेषकर माता का।

इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनसे यह पता चलता है कि माताओं ने अपनी सन्तानों को जैसा चाहा वैसा बना दिया। अतः स्वामी जी ने जो यह लिखा कि "धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे" ठीक ही लिखा है।

इस पंक्ति से यह बात भी ध्वनित होती है कि बच्चों की शिक्षा दीक्षा का काम तो माता के गर्भ में ही (जन्म लेने से पहले ही) शुरु हो जाता है। तभी तो स्वामी जी का यह कहना बिल्कुल उचित प्रतीत होता है कि माता के खाने–पीने, आहार–विहार तथा चिन्तन आदि सबका गर्भ में स्थित बालक पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। विज्ञान व मनोविज्ञान भी स्वामीजी की इस मान्यता का भरपूर समर्थन करता है और देखने सुनने में भी अनेकों बार आया है। कई बार बालक रंगरूप तथा बुद्धि आदि में वैसा नहीं होता जैसे कि माता–पिता होते हैं। माता पिता गोरे शरीर के हैं सभी अंग प्रत्यंग स्वस्थ तथा सुन्दर हैं, परन्तु सन्तान का रंग गोरा न होकर काला है, अंग प्रत्यंग भी विकृत हैं तथा भद्‌दे लगते हैं। भयानक शक्ल सूरत दिखाई देती है। यह क्यों हुआ? वैद्यों, डॉक्टरों द्वारा जांच करने पर पाया गया कि जब बच्चा गर्भ में था तो माता के ठीक सामने दीवार पर एक भद्‌दी शक्ल के काले–कलूटे भयानक राक्षस व्यक्ति की तस्वीर लगी थी जिसको लेटी हुई माता हमेशा देखती रहती तथा सोचती रहती थी। परिणाम स्वरूप वैसा ही बच्चा पैदा हो गया। ऐसे ही यदि माता वीरों की, देशभक्तों की, महापुरुषों की तस्वीरों को दीवार पर देखती है या उन महापुरुषों के बारे में सोचती है तो वैसा ही प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ जाता है। न केवल शरीर की शक्ल सूरत से बल्कि माता के चिन्तन से माता के खान–पान से बच्चे पर प्रभाव पड़ना शुरु हो जाता है। तभी तो माताओं ने वीर अभिमन्यु जैसों का निर्माण किया। मदालसा जैसी माताओं ने गर्भावस्था में ही शिक्षण से अपने बच्चों को ब्रह्मर्षि तक बना दिया। मनुस्मृति का यह श्लोक इस बात की पुष्टि करता है –

यादृशं भजते नारी सुतं सूते तथाविधम्। तस्मात् प्रजा विशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत् प्रयत्नतः।। (मनु.)

अर्थात् गर्भवती महिला जैसा भी चित्र मन में खींच लेती है वैसी ही सन्तान उत्पन्न होती है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर ही स्वामीजी महाराज माता–पिता को सावधान करते हुए तथा उनके कर्त्तव्य की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं –"माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, रुक्ष, बुद्धि नाशक पदार्थों को छोड़कर जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करावे वैसे घृत, दुग्ध, मिष्टान, अन्न पान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करे जिससे रजस वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुण युक्त हो" तथा "बुद्धि बल रूप आरोग्य पराक्रम शान्ति आदि गुण कारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहे कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।"

बच्चा जब बोलना सीखने लगता है तब माता ही बच्चे की पहली गुरु होती है

– शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म् की महिमा

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

यम और नचिकेता की कथा की कथा तो अपने सुनी है। यम ने अपने घर में आए मेहमान से तीन वर मांगने के लिए कहा। नचिकेता ने दो वर मांग लिए। अपने लिए नहीं, अपितु दूसरों के लिए। यम ने कहा – 'कुछ अपने लिए भी तो मांग!'

नचिकेता ने कहा – 'मेरे लिए ही वर देना चाहते हो तो, बताओ कि वह क्या है, जिसे ईश्वर कहते हैं?'

यम ने कहा – 'यह न पूछ। कोई और वस्तु मांग ले। मैं तुझे बेअन्त धन और दौलत दे सकता हूं। सारी पृथिवी का राज दे सकता हूं। दीर्घायु दे सकता हूं। सुन्दिर स्त्रियां दे सकता हूं। भोग–विलास के सामान दे सकता हूं।'

आजकल का कोई नवयुवक होता हो शायद कहता – 'ला यही दे दे।' परन्तु नचिकेता ने कहा – 'नहीं, यह सबकुछ मुझे नहीं चाहिए, यह सब तो नाश होने वाला है। मुझे वर दे, जो कभी नाश नहीं होता। अन्त में मरना है मुझे। मरने के पश्चात् तेरे पंजों में न फंसूं, वह मार्ग बता मुझे।'

जब वह किसी भी उपाय से नचिकेता को नहीं मना सका, जब किसी भी रीति से उसका हठ दूर नहीं कर सका तो बोला :–

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। तदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यंचरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।

सब वेद जिस महान पद का वर्णन करते हैं, सब तपस्वी जिसकी बात कहते हैं, जिसकी इच्छा से ब्रह्मचारी अपने व्रत को धारण करते हैं, उसे संक्षेप में तेरे सामने कहता हूं।

ओ३म् है वह :–

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म ह्येतद्ध्येववाक्षरं परम्। एतद्‌ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

वास्तव में यही वह अक्षर है, जो ब्रह्म है। निश्चित रूप से यही अक्षर परम है। इसको जानकर जानने वाला सब कुछ पाता है, जिसकी वह इच्छा करता है। इससे भी आगे चलकर उसने कहा :–

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्। एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

इसका आसरा सबसे बड़ा है। इसका आसरा सबसे ऊपर है। इसका आसरा लेकर आसरा लेने वाला ब्रह्मलोक में आनन्द और महिमा प्राप्त करता है।

ब्रह्म-सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (34)

एवं चात्माऽकात्स्र्न्यम्।।34।।

अर्थ – (एवं) इस प्रकार (च) तो (आत्मा आकात्स्र्यम्) आत्मा व परमात्मा की अपूर्णता और अव्यापिता हो जाएगी। अर्थात् जगत् को ब्रह्म का परिणाम मानने पर ब्रह्म में अव्यापकता का दोष आ जाएगा।

भावार्थ – शास्त्रों में ब्रह्म को सम्पूर्ण, सर्वव्यापक कहा गया है। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां ब्रह्म न हो। यदि यह माने कि ब्रह्म जगत् के रूप में परिणत होता है तो प्रश्न होगा कि ब्रह्म का कोई एक अंश परिणत होगा या सम्पर्ण ब्रह्म? यदि ब्रह्म का कोई एक हिस्सा जगत् के रूप में परिणत होता हो तो ब्रह्म का सर्वव्यापक या अखण्ड होना सम्भव न होगा। ब्रह्म को जो भाग जगत् के रूप में परिणत हो जाएगा उसके ब्रह्म रूप न रहने से उसकी अव्यापिता होगी। दूसरे विकल्प में ब्रह्म का पूरा अंश ही समाप्त हो जाएगा। तब ब्रह्म का चेतन, आनन्द आदि स्वरूप भी नहीं रहेगा।

प्रतिवादी कह भी सकता है कि जो भाग जगत् के रूप में परिणत हो गया वहां उसी रूप में ब्रह्म की सत्ता होगी। यह कथन भी विचारणीय है क्योंकि कोई कार्य हमेशा एक देशीय नहीं रहता, उसका सक्रिय होना आवश्यक है संसार में ऐसा कोई कार्य सम्भव नहीं जो सम्पन्न होने के बाद किसी एक स्थान पर एकदम निष्क्रिय पड़ा रहे। ऐसा तत्त्व ब्रह्म ही हो सकता है, जो सदा सर्वत्र व्याप्त है। सिद्धान्त पक्ष में प्रकृति के जगत् में परिणत होने में कोई दोष नहीं है। प्रकृति त्रिगुणात्मक और अनन्त रूपों वाली है। ब्रह्म की तरह वह एकतत्व रूप नहीं है। जगत् की सृष्टि के लिए जितने भी तत्त्व जिन रूपों में जरुरी हैं सर्वज्ञ चेतन ब्रह्म अपनी व्यवस्था के अनुसार उन्हें जगत् के रूप में परिणत करता है।

प्रस्तुत सूत्र में सूत्रकार का अभिप्राय यह है कि जगत् को ब्रह्म का परिणाम मानने पर ब्रह्म के स्वरूप को दोष से मुक्त नहीं रखा जा सकता। उसके सर्वशक्ति होने का मतलब यह है कि वह अपनी निर्धारित व्यवस्था के अनुसार सृष्टि की रचना करता है।

[यदि इसे हम आत्मा के सन्दर्भ में देखें तो इस सूत्र की व्याख्या निम्न लिखित प्रकार से की जा सकती है।]

जैसे एक जड़ पदार्थ में दो परस्पर विरोधी गुणों का होना तर्कसंगत नहीं है उसी प्रकार आत्मा की असम्पूर्णता की बात भी युक्तियुक्त नहीं है। आत्मा सूक्ष्म और निर्विकारी तत्त्व है। वह जितनी है उतनी ही रहती है, घटती–बढ़ती नहीं है और वह अपने आप में पूर्ण है। इसको अपूर्ण बताना अर्थात् यह कहना कि आत्मा घटती–बढ़ती रहती है यानि हाथी के शरीर में वह हाथी जितनी और चींटी के शरीर में चींटी जितनी हो जाती है। यह बुद्धि विरुद्ध और सम्भव न होने से मानने के योग्य नहीं है।

– शिष्य प्रश्न करता है कि जगत् को ब्रह्म का परिणाम मान कर ब्रह्म की सम्पूर्णता, अखण्डता और व्यापिता में जो विरोध दिखाया गया है उसकी कोई सम्भावना नहीं है क्योंकि व्यक्त जगत् के गतिक्रम के अनुसार ब्रह्म का अस्तित्व सभी स्थानों पर बना रहता है तब अव्यापिता क्यों आएगी? सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

सार्वदेशिक सभा प्रकरण : जानें वर्तमान परिस्थिति को!

प्रथम पृष्ठ का शेष

तीनों ही पक्षों ने अपनी–अपनी सूची जजों के समक्ष प्रस्तुत की उस सूची में सात प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों के नाम समान पाए गए। जैसे – जम्मू–कश्मीर, बम्बई, उड़ीसा, आसाम, हिमाचल, गुजरात, व प्रादेशिक सभा। इन सभाओं के अधिकारी तीनों ही पक्षों को स्वीकार थे। परन्तु अन्य 17 सभाओं के सम्बन्ध में विभिन्न पक्षों द्वारा अलग–अलग अधिकारी प्रस्तुत किए गए थे। उदाहरण के तौर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में, कैप्टन देवरत्न आर्य के पक्ष द्वारा ब्र0 राजसिंह आर्य–प्रधान, श्री विनय आर्य – महामन्त्री; स्वामी अग्निवेश जी के पक्ष द्वारा – श्री ओम प्रकाश मान– प्रधान, श्री बलजीत सिंह आदित्य –महामन्त्री; श्री मिठाईलाल सिंह जी के पक्ष द्वारा – श्री वैद्य इन्द्रदेव – प्रधान तथा श्री नरेन्द्र आर्य – महामन्त्री के रूप में दर्शाए किए गए हैं। इसी प्रकार अन्य सभाओं हेतु भी विभिन्न पक्षों ने अलग–अलग नाम दिए हैं।

3. ऐसी सभी प्रान्तों की सूची आने के पश्चात् मान्य जजों ने आदेश दिया कि सभी पक्ष जिस प्रान्तीय सभा में जिसको अधिकारी मानते हैं, उसके सत्यता के सम्बन्ध में तथ्यों सहित पूर्ण कागजात प्रस्तुत करें। साथ ही यह भी निर्देश दिया कि अपने पत्र में अपने पक्ष में तथ्यों के साथ–साथ सामने वाले पक्ष के सम्बन्ध में भी अपनी राय प्रस्तुत करें ताकि जज महोदय उपलब्ध कागजातों के आधार पर तथा आवश्यकता पड़ने पर विभिन्न अधिकारियों को अपने समक्ष बुलाकर यह निर्णय कर सकें कि किस प्रान्तीय सभा के वास्तविक अधिकारी कौन हैं। **(हम समझते हैं कि इस प्रक्रिया के अतिरिक्त और कोई भी प्रक्रिया निष्पक्ष चुनावों की ओर इस प्रकरण को नहीं बढ़ा सकती। लेकिन हमारे मान्य मित्र श्री मिठाई लाल सिंह जी का पक्ष तथा स्वामी अग्निवेश जी का पक्ष जान बूझकर इस प्रक्रिया को लम्बी खींचना चाहते हैं और कतई नहीं चाहते आर्यसमाज के हित के लिए इस समस्या का निदान हो जाए।)**

4. सभी पक्षों द्वारा अपने–अपने कहे गए अधिकारियों के समर्थन में कागजात जमा कराए गए। कैप्टन देवरत्न आर्य जी के पक्ष की ओर से पूरी 18 फाइलें, दी गई तिथि तक जमा करा दी गईं। श्री मिठाई लाल जी के पक्ष की ओर से कुल 10 फाइल जमा कराई गई हैं। स्वामी अग्निवेश जी के पक्ष की ओर से कुल 13 फाइलें जमा कराई गई हैं। माननीय जज महोदयों ने अगली प्रक्रिया के रूप में यह निर्धारण किया है कि विवाद वाली एक सभा को लेकर उस पर पूर्ण चर्चा करके निर्णय कर दिया जाए। उदाहरणार्थ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की तिथि 11 जुलाई रखी गई है। 11 जुलाई को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कागजातों पर चर्चा होगी तथा आवश्यकता पड़ने पर जो पक्ष अपने आपको दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिकारी बता रहे हैं, उनको भी सुना जा सकता है ताकि न्यायपूर्ण निर्णय किया जा सके।

इसलिए हम यह कह सकते हैं कि यह प्रक्रिया अब तक लम्बे समय से चल रहे विवाद को समाप्त करने के लिए उपयुक्त एवं सर्वोपयोगी है।

किन्तु दु:ख से कहना पड़ रहा है कि श्री मिठाई लाल जी का पक्ष एवं श्री स्वामी अग्निवेश जी का पक्ष इस प्रक्रिया को पूरी होने देना नहीं चाहते।

क्यों? इसको बताने के लिए मैं समझता हूं कुछ भी लिखाने की आवश्यकता नहीं है। यह पब्लिक है – सब जानती है – सब समझती है। इस प्रक्रिया से बचने के लिए उन्होंने नया राग आरम्भ किया – "कोर्ट में छोड़ो, कोर्ट में क्या होने वाला है?" "खुद बैठकर समाधान कर लेते हैं।" "एक समिति बना लेते हैं।" "संन्यासियों को सौंप देते हैं।"

और जब इससे भी पार नहीं पड़ी तो कोर्ट में मुकदमा ही वापस लेने चल पड़े। कोर्ट के समक्ष जाकर श्री वधावन जी ने गत 20 मई, 2009 को एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया जिसमें यह कहा गया कि क्योंकि मुकदमा मैंने डाला हुआ है, अत: मैं मुकदमा वापस लेना चाहता हूं। इतना भय! इतना डर! लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का। आखिर क्यों? आखिर क्यों नहीं होने देना चाहते निष्पक्ष चुनाव? आखिर क्यों रोकना चाहते हैं यह प्रक्रिया? खैर, माननीय जज महोदय के सामने कैप्टन देवरत्न आर्य जी के पक्ष के वकील सीनियर एडवोकेट वीरेश प्रताप चौधरी जी ने अपना पक्ष रखा और जज महोदय को इनकी नियत भांपने में देर न लगी और इन द्वारा दायर प्रार्थनापत्र उसी दिन अस्वीकृत करते हुए चुनाव की प्रक्रिया पर रोक लगाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया।

कभी देश भर में फोन करके, झूठी–मनगढ़न्त अफवाहें फैलाना, कभी मुकदमें को अपने पक्ष में हुआ बताना, कभी झूठा ही यह कह देना कि सार्वदेशिक सभा का कार्यालय खाली करा लिया गया है। इतना बड़ा झूठ! आखिर क्या उद्देश्य है इस प्रकार के झूठ बोलने का?

हम पुन: कहना चाहते हैं यदि इस प्रकरण को समाप्त करना चाहते हैं तो असत्य से मुंह मोड़ना पड़ेगा। केवल सत्य मानने से ही इस प्रकरण की न्यायपूर्ण समाप्ति सम्भव है। किन्तु यदि जान–बूझकर निरन्तर झूठ बोला जाता रहा, झूठ का पोषण किया जाता रहा, और आर्यसमाज का हित चाहने वाले संन्यासी महानुभाव भी जब सच को सच कहने के लिए तैयार नहीं हों तो सच आखिर किसका सहारा ले? इस सम्बन्ध में कैप्टन देवरत्न आर्य जी के पक्ष द्वारा बहुत ही निष्पक्षतापूर्वक सूची दी गई। उसके कुछ उदाहरण हम आपके समक्ष रखते हैं –

कैप्टन देवरत्न आर्य जी के पक्ष से टूटकर समानान्तर सभा बनाने में सबसे अधिक योगदान देने वाले श्री मिठाई लाल जी एवं श्री सुदर्शन शर्मा थे। क्योंकि उनका स्वार्थ गुरुकुल कांगड़ी को येन–केन–प्रकारेण अपने कब्जे में बनाए रखना था, किन्तु अनेक महानुभावों के कहने के पश्चात् भी कैप्टन देवरत्न आर्य ने उन सभाओं तथा उन अधिकारियों को भंग नहीं किया न ही तदर्थ समिति का गठन किया। जबकि कै. आर्य अधिकार पूर्वक इस प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही कर सकते थे। किन्तु आर्यसमाज एवं सभा के सर्वकालिक एवं दूरगामी हितों को देखते हुए उन्होंने ऐसा नहीं किया तथा बड़ी ही निष्पक्षता पूर्वक मुम्बई सभा का प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह को तथा पंजाब सभा का प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा को लिखा। यदि कैप्टन आर्य का पक्ष भी इस विवाद को उलझाना चाहता तो मुम्बई तथा पंजाब में मनमानी कमेटियां बनाकर उनका नाम सूची में दे देता। किन्तु ***"सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को छोड़ने"*** के नियम को चरितार्थ करते हुए कैप्टन आर्य ने जो वैध अधिकारी हैं चाहे वे विरोधी भी हैं, तो भी उन्हीं के नाम कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किए। इससे बड़ा उदाहरण और कोई नहीं हो सकता, यह सिद्ध करने के लिए कि कै. आर्य का पक्ष पूर्णत: निष्पक्ष चुनाव कराने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहता है।

अब इसी क्रम में हम एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न सभा की एकता के लिए अपने आपको तत्पर दिखा रहे उन संन्यासी महोदय से पूछना चाह रहे हैं जो यदा–कदा यह कहने से नहीं चूकते कि कै. साहब का पक्ष नहीं चाहता कि एकता हो। न जाने किस मोह में फंस चुके हैं आदरणीय स्वामी जी। या तो वे सत्य को जानते नहीं अथवा उस सच्चाई से दूर भागना चाहते हैं।

हमारा प्रश्न है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का प्रधान कौन है? इस देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी यदि यह प्रश्न किया जाए तो इसका एकमात्र उत्तर मिलेगा **– आचार्य बलदेव जी महाराज।**

क्या इतनी सी बात आदरणीय स्वामीजी नहीं जानते? यदि वे निडरतापूर्वक और अपने संन्यस्थ धर्म को निभाते हुए संगठन के हित में सार्वजनिक रूप से घोषणा करके कहें कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य बलदेव जी हैं तो विवाद समाप्त करने में उनकी भूमिका के प्रति सभी नत–मस्तक होंगे। फिर शायद इस बात की आवश्यकता लोग महसूस करें कि आपसी समिति बनाकर इस विवाद का हल किया जा सकता है।

इसी प्रकार सारा विश्व इस बात से पूर्णत: परिचित है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य हैं। किन्तु माननीय स्वामी जी हैं कि मानने के लिए तैयार ही नहीं। जाने क्या हठ या क्या दुराग्रह है कि सच को सच नहीं मानना चाह रहे। स्वामी अग्निवेश जी का स्वार्थ समझ में आता है। स्वामी आर्यवेश, श्री विमल वधावन, श्री मिठाई लाल सिंह जी आदि का स्वार्थ समझ में आता है पर माननीय स्वामी जी का आखिर क्या स्वार्थ है? यह तो विचार करना ही पड़ेगा।

यदि वे अपने प्रभाव से दोनों पक्षों से यह कहें कि जिस सभा के जो अधिकारी सही हैं उनको मानने के लिए किसी प्रकार की अड़चन न लगाएं क्योंकि वर्तमान में उन्हें श्री मिठाई लाल जी का पक्ष एवं स्वामी अग्निवेश जी का पक्ष एकता का सूत्रधार मान रहा है तो यह एकता शीघ्र और अतिशीघ्र हो जाएगी और स्वामी जी का यश एवं कीर्ति भी बढ़ेगी। परन्तु केवल तब यदि वे ऐसा कहें और उनके कहने पर दोनों पक्ष इसे मान लें और यदि इस सुझाव को स्वामी जी ठीक समझते हैं तो दोनों पक्षों को कहकर देख लें, उनकी नियत का भी सही बोध हो जाएगा।

परन्तु यदि ऐसा सम्भव नही है तो हमारा कहना है कि लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के अनुसार सार्वदेशिक सभा के नए चुनाव सम्पन्न कराने के लिए बनी हुई तीन जजों की समिति का सहयोग करें तथा उस प्रक्रिया को पूरा होने दें।

पाठकगण, विचार कर रहे होंगे कि उन स्वामी जी का नाम इस लेख में नहीं लिखा गया। इसके लिए हम क्षमा चाहेंगे। जिन पाठकों को इस प्रकरण का यथावत ज्ञान है वे नाम समझ गए होंगे। अत: नाम प्रकाशित न करने के लिए हम क्षमा चाहेंगे। हां, वह नाम स्वामी अग्निवेश या स्वामी आर्यवेश नहीं है। एकता होनी चाहिए, समाधान होना चाहिए, किन्तु नियमों–उपनियमों तथा लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के अनुसार अन्यथा नहीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यवीरों का सम्मान समारोह

आर्यसमाज की युवा शक्ति आर्यवीर दल वर्षों से विभिन्न अवसरों पर समाज व राष्ट्रीय स्तर पर सेवा कार्यों का संचालन करता आ रहा है। आर्य वीर दल का उद्देश्य ही सेवा, शक्ति संचय तथा संस्कृति रक्षा है। आर्यवीर दल की यह युवा शक्ति आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यों व राष्ट्रीय उत्कर्ष के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेती रही है तथा प्रत्येक कार्य को अनुशासित व तत्परता से करने में सक्रिय रहती है। आर्यसमाज को प्रदान की जा रही सेवाओं के लिए सभा की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष पर आर्यवीरों का विशेष स्वागत् व सम्मान समारोह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में रविवार 10 मई, 2008 प्रातः 11 बजे आयोजित किया गया। सम्मान समारोह के पश्चात् आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की बैठक का भी आयोजन किया गया।

– जितेन्द्र खरबन्दा,
अधिष्ठाता, आर्यवीर दल

ऊपर : – आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश की बैठक को सम्बोधित करती ब्र0 सुमेधा आर्या तथा दत्तचित्त होकर बैठे आर्यवीर। आर्यवीरों के सम्मान समारोह के अवसर पर संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य। इस अवसर पर आर्य वीरांगनाओं तथा आर्यवीरों का भी प्रशस्ति पत्र दिए गए। नीचे :– सम्मान प्राप्त करने वाले आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं के साथ उपस्थित अधिकारीगण।

आवश्यकता है

दिल्ली राज्य की समस्त आर्यसमाजों की संस्था **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23360150, 23365959 फैक्स : 23343737** Email : aryasabha@yahoo.com; aryasabha@in.com; Web. www.delhisabha.com को आवश्यकता है।

1. **वैदिक विद्वान** : ऐसे सुयोग्य वैदिक विद्वान जिन्होंने गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त की हो। **अनुभव** : आर्यसमाज के क्षेत्र में कार्य करने का अनुभव रखते हों, अंग्रेजी/इन्टरनेट एवं कम्प्यूटर की सामान्य जानकारी रखते हों, जो वैबसाइट के संचालन की जानकारी रखते हों, ऑनलाइन प्राप्त होने वाले प्रश्नों के उत्तर इन्टरनेट के माध्यम से दे सके, जो सभा के मुखपत्र साप्ताहिक आर्यसन्देश के सम्पादन कार्य में सहयोग कर सकें। **वेतनमान** : चयनित उम्मीदवार को योग्यतानुसार व सन्तोषजनक मानदेय तथा साधारण आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

2. **उपदेशक/भजनोपदेशक** : ऐसे विद्वान उपदेशक एवं भजनोपदेशक जो सभा के वेद प्रचार विभाग के अन्तर्गत वेद प्रचार कार्य करने के इच्छुक हों। चयनित उम्मीदवार को योग्यतानुसार व सन्तोषजनक मानदेय तथा साधारण आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

3. **हिन्दी आशुलिपिक** : शैक्षिक योग्यता : कम से कम इंटरमीडिएट। हिन्दी टंकण एवं आशुलेखन का अच्छा अनुभव हो। कम्प्यूटर पर कार्य करने वाले एवं डीटीपी कार्य में अनुभवी आवेदन करें।

4. **ड्राइवर** : वैध लाइसेंस तथा बैज वाले ऐसे उम्मीदवार जिन्हें दिल्ली के रूटों की जानकारी हो। आवास सुविधा प्रदान की जाएगी। अनुभवी उम्मीदवार को वरीयता दी जाएगी।

इच्छुक प्रार्थी अपना आवेदन पत्र विस्तृत जीवनवृत्त (बायोडाटा) सहित उपरोक्त पते पर **15 जून, 2009 से पूर्व** अवश्य ही भेज दें। इसके बाद प्राप्त आवेदन पत्रों पर विचार किया जाना सम्भव नहीं हो सकेगा। आवेदन पत्र के लिफाफे पर **'पद.... हेतु आवेदन पत्र'** अवश्य लिखें।

- विनय आर्य
महामन्त्री, 9350204466

श्री मदन मोहन सलूजा को "यज्ञश्री सम्मान"

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट द्वारा गत दिनों आयोजित सम्मान समारोह में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के संरक्षक, समाजसेवी श्री मदन मोहन सलूजा जी को वैदिक सिद्धान्तों के प्रति सर्वात्मना समर्पित अभिनन्दनीय योगदान के लिए यज्ञश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 75 से अधिक देशों में वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार में संलग्न पद्मश्री श्यामसिंह शशि को भी 'संस्कृति सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया। आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाव के प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उप प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य को भी उनकी सेवाओं के लिए 'यज्ञश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया।

श्री मदनमोहन सलूजा जी को यज्ञश्री सम्मान से सम्मानित करते श्री भजनप्रकाश आर्य, पद्मश्री श्याम सिंह शशि एवं श्री अरुण आर्य। साथ में हैं सर्वश्री कन्हैयालाल आर्य, हीरालाल आर्य एवं अतुल आर्य।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (हरियाणा) में
नि:शुल्क योग एवं सुगृहस्थ निर्माण शिविर बृहद् यज्ञ
22 जून से 28 जून, 2009

शिविर दिनचर्या : **प्राणायाम, ध्यान एवं योगासन** : प्रातः 5 से 6.30 बजे
यज्ञ, भजन, प्रवचन : प्रातः 7 से 9.30 बजे सायं 4.30 से 6.30 बजे
गृहस्थ निर्माण प्रशिक्षण : प्रातः 10.30 से 12.30 तथा 3 से 4 बजे

शिविर का उद्घाटन 22 जून को सायं 4 बजे होगा। 28 जून, 2009 को प्रातः 10 बजे पूर्ण आहुति तत्पश्चात् शिविर समारोह मध्य अनेकों उच्च कोटि के योगी महात्माओं, वक्ताओं को आमन्त्रित किया गया है। इस शिविर के मध्य विशेषकर युवा दम्पति अधिक से अधिक भाग ले तो अति उत्तम रहेगा। लेखनार्थ कापी, पैन और ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लाएं। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगा।

– सत्यानन्द आर्य, प्रधान *दर्शन कुमार अग्निहोत्री, मन्त्री*

पृष्ठ ३ का शेष

अतः उस समय के कर्त्तव्य कर्म का ध्यान करते हुए माता को चाहिए कि वह ऐसा प्रयत्न करे कि जिससे बच्चे की जिह्वा कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण करने में समर्थ हो सके तथा जब वह समझ के योग्य हो जाता है तो माता–पिता राजा आदि से कैसे बात की जाती है, उनके पास कैसे उठना–बैठना चाहिए तथा योग्य व्यवहार की शिक्षा भी माता बच्चे को देती है जिससे सन्तान सभ्य बने तथा किसी भी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। ऐसा उपदेश भी माता बच्चे को देती रहे।

लड़का–लड़की जब पांच–पांच वर्ष के हो जाएं तब उन्हें माता–पिता देवनागरी अक्षरों का पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास करावे। लेकिन स्वामीजी की यह भी मान्यता है कि अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी उन्हें ज्ञान करावे। अर्थात् स्वामी जी के विचार में बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा जो बच्चे की है उसमें होनी चाहिए। उसका पूर्ण ज्ञान उन्हें होना चाहिए बाद में संसार की अन्य भाषाएं जितनी भी वह सीख सकता है उतनी उसे सिखाएं। स्वामी जी बच्चों के शुद्धोच्चारण पर भी काफी बल देते थे।

वे आगे लिखते हैं बच्चों को ऐसे मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित याद कराएं जिनसे अच्छी शिक्षा मिले, विद्या धर्म परमेश्वर माता–पिता–आचार्य, विद्वान, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, भगिनी, भृत्य आदि के साथ कैसा वर्तना चाहिए इन बातों का भी पता चले। इसके साथ ही स्वामीजी उन बातों का भी उल्लेख किए बिना नहीं चूकते कि जो–जो विद्या धर्म विरुद्ध, भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें। इसमें केवल माता का ही नहीं बल्कि पिता का भी पूर्ण कर्त्तव्य है कि वे उपरोक्त भ्रान्तियुक्त बातों के बारे में भी बच्चों को जानकारी करवा दें ताकि बच्चों को भूत–प्रेत आदि के मिथ्या विश्वास मस्तिष्क में घर न कर सकें।

कई माता–पिता तथा बुजुर्ग लोग अपने बच्चों को भूत–प्रेतों की कपोल–कल्पित कहानियां सुनाते रहते हैं जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े होने पर भी उनके हृदय में भय समाया रहता है। जब किसी समय में अधिक अंधेरा होने से रास्ते में पशु–पक्षी, गीदड़ आदि देखने या गीदड़ आदि के भागने का शब्द सुनकर अपने दिल में पहले सुने के संस्कार होने से भूत–प्रेत आदि का अत्यन्त मिथ्या विश्वास होने से भयभीत होकर कांपने लगते हैं, बुखार आदि चढ़ जाता है। परन्तु आयुर्वेद के ग्रन्थों में अनेक प्रकार के मानस रोग लिखे हैं वे जब किसी व्यक्ति को हो जाते हैं तो व्यक्ति विचित्र प्रकार की हरकतें करने लगता है। तब निर्बुद्धि लोग कहने लगते हैं कि इसके शरीर में भूत अथवा प्रेत है। लेकिन ये बातें सच्ची नहीं हैं। वास्तव में भूत उसे कहते हैं जो बीत गया। ऐसा

सन्तानों की शिक्षा....

समय भूत कहाता है तथा प्रेत शब्द का प्रयोग मृतक शरीर के लिए अनेकशः आया है। अतः बच्चों को अंध विश्वासों से दूर रखने के लिए सत्य–सत्य बातें बता देनी चाहिएं जिससे बच्चे डरें नहीं। उन्हें यह भी पक्की तरह बता देना चाहिए कि भूत–प्रेत नाम की कोई योनियां नहीं होती। आज भारत में भूत–प्रेतों की काल्पनिक सत्ता को लेकर अनेक प्रकार के पाखण्ड, दुराचार एवं ढोंग प्रचलित हो रहे हैं। इस कारण बहुत से अनपढ़ अशिक्षित जनों को अनेक प्रकार की हानियां उठानी पड़ती हैं। कभी–कभी तो अच्छे पढ़े–लिखे लोग भी भूत–प्रेत के मिथ्या विश्वासों में फंसकर अनेक नुकसान उठाया करते हैं।

स्वामीजी ने भूत–प्रेतों के अंध विश्वासों के निवारण के साथ ही फलित ज्योतिष के अंध विश्वास की भी पूरी तरह चर्चा कर ऐसे फलित ज्योतिष से सन्तानों को दूर रखने की सलाह माता–पिता को दी है। फिर चाहे वे फलित ज्योतिष जन्मपत्र के नाम पर हों। फलादेश, भविष्यफल, शकुन विचार, आदि अनेक प्रकार के पाखण्डों की तरफ भी ध्यान आकर्षित कर सत्य शिक्षा देने का ही सुझाव दिया है। सही ज्योतिष के तो स्वामीजी हामी हैं। इसके अलावा तन्त्र–मन्त्र, ताबीज आदि का प्रचलन भी अंध विश्वास है और जनता को ठगने का एक ढंग है। इससे बचे रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त तान्त्रिक लोगों की वशीकरण की बातें, किसी को मारने की बात आदि का भी खण्डन कर सही पथ प्रदर्शन किया है और लोगों को समझाया है कि सभ्य समाज इन बुराइयों से दूर ही रहता आया है।

वीर्य रक्षा के लाभ में ही आनन्द है। इस बात का विशेष उल्लेख करने के बाद एक विशेष बात की ओर भी स्वामी जी ने संकेत किया है जो बड़ा जरूरी है और वह यह है कि बच्चों को लाड़–प्यार में न बिगाड़ें। बल्कि उनका ताड़न अवश्य करते रहें क्योंकि लाड़ लड़ाने से बच्चे बिगड़ते हैं और ताड़न करने से बच्चों में सुधार होता है। इस विषय में स्वामी जी ने महाभाष्य का प्रमाण प्रस्तुत कर समझाने का प्रयत्न किया है –

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः। लालश्रयिणो दोषास्ताडना श्रयिणो गुणाः।।

अर्थ – जो माता–पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपनी सन्तानों और शिष्यों को विष पिलाके नष्ट–भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़न से गुण युक्त होते हैं और सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें।" परन्तु आगे चेतावनी भरे शब्दों में यह भी लिखा है कि "परन्तु माता–पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।" स्वामी जी के उपरोक्त वाक्यों को देखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वे बच्चों की ताड़ना को सुधार के लिए आवश्यक बताते हैं परन्तु ध्यान रहे यहां ताड़ना शब्द है मारना नहीं है और वह भी बच्चे की हित की दृष्टि से।

– शेष अगले अंक में

धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति
303/4, महरौली, नई दिल्ली–30,
दूरभाष: 26642945

विचार टेलिविजन नेटवर्क लिमिटेड

19/151, ओल्ड आनन्द नगर, वकोला पुलिस स्टेशन के पीछे, सान्ताक्रुज (पू.), मुम्बई
दूरभाष : 022–26681787, Email : vichaar.tv@gmail.com

आर्यसमाज के विद्वानों, भजनोपदेशकों, संगीतज्ञों, लेखकों, प्रकाशकों, पुरोहितों, अनुसंधानकर्त्ताओं, पदाधिकारियों, गुरुकुलों/विद्यालयों, गौशाला केन्द्रों, टेक्निकल लोगों, कलाकारों आदि। अन्य ऐसे सभी महानुभावों को (जो व्यक्तिगत स्तर पर अथवा संस्था के माध्यम से किसी भी रूप में जुड़े हों) वेद–विज्ञान आर्यसमाज/महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़ने का शुभ अवसर

ऊपर लिखित सभी व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए यह सुअवसर होगा, जब आप अपनी बात मल्टीमीडिया के माध्यम से साधारण जन तक पहुंचा सकेंगे।

आपको क्या करना है?

यदि आपके पास पूर्व या वर्तमान में बनाई गई कोई सीडी, वीसीडी, डीवीडी, कैसेट, साहित्य सामग्री वेदोक्त विषय को लेकर, किसी भी फॉरमेट में अर्थात्, नाटक, कॉनसैप्ट, कहानी, कथा, डॉक्यूमेंन्ट्री (रिसर्च मैटर), भजन, प्रवचन, डिबेट, संस्था के कार्यक्रम जो कि वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित हों, को विचार के कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

ध्यान रखें कि भेजी हुई सामग्री पर उसकी विषयवस्तु, अवधि इत्यादि पूरी बातें लिखी हों। (सामग्री 25 मई तक कम्पनी के मुम्बई कार्यालय को मिल जानी चाहिए।) आपके द्वारा भेजी गई सामग्री के चुने जाने पर आपके कार्य के अनुसार आपको "विचार" टीवी द्वारा निर्धारित यथायोग्य पारिश्रमिक देने की व्यवस्था की जाएगी। ***विशेष :–*** 1. आपके द्वारा भेजी गई सामग्री को पढ़कर देखकर सुरक्षित रूप से रखा जाएगा और चयनित सामग्री को उपयोग करने से पहले उसका उचित मूल्य देकर अनुमति और अधिकार लेकर ही प्रयोग में लाया जाएगा।

2. आप जब अपना विषय भेजें तो उस पर अपना पूरा नाम, पता, दूरभाष, मोबाइल, ईमेल आदि अवश्य भेजें।

– पीयूष आर्य, निदेशक

प्रवेश सूचना

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, जिला–मुजफ्फनगर (उ.प्र.)
टैलिफैक्स : 01396 – 228357

गुरुकुल में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य कक्षा कक्षा हेतु प्रवेश के लिए आवेदन आमन्त्रित हैं।

1. प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु 10 वर्ष तथा 5वीं पास होना अनिवार्य है। पूर्व मध्यमा हेतु 8वीं, मध्यमा के लिए 10वीं, शास्त्री के लिए 12वीं तथा आचार्य के लिए 14वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। प्रवेश के समय परीक्षा होगी।
2. प्रवेश जुलाई में आरम्भ होंगे। प्रवेश के समय 300/– प्रवेश शुल्क, 100/– तख्त शुल्क, 100/–भवन शुल्क तथा 500/– रुपये भोजन व्यय की दर से तीन मास की राशि अगाऊ ली जाएगी। छात्रावास में न रहने वाले छात्र को शिक्षण शुल्क तथा विकास शुल्क देना होगा।
3. निर्धन व योग्यतम छात्रों को 300/– रुपये मासिक छात्रवृत्ति दी जाएगी।

अधिक जानकारी व प्रवेश हेतु सम्पर्क करें :–

इन्द्रपाल आर्य, प्रधानाचार्य, मो. 9411929528

आर्यसमाज नांगलराया नई दिल्ली का
60वां स्थापना दिवस समारोह

29 से 31 मई, 2009

यज्ञ : प्रतिदिन 6.30 से 7.15 बजे
ब्रह्मा : आचार्य भद्रकाम वर्णी
भजन : श्री जबर सिंह खारी

समापन एंव संगोष्ठी : 31 मई, 09
विषय: धर्म निरपेक्षता का वास्तविक स्वरूप

मुख्य अतिथि : श्री दीपक भारद्वाज
मुख्य वक्ता : श्री बनारसी सिंह

आप सब परिवार एवं इष्टमित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– भगवानदास, प्रधान
डॉ. जयदेव वर्मा, मन्त्री

आर्यसमाज डी.एल.एफ. फेज–2 गुड़गांव की

नवनिर्मित यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन

रविवार 17 मई, 2009 को प्रातः क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों यज्ञ प्रेमियों तथा आसपास के आर्यजनों के बीच नव निर्मित भव्य यज्ञशाला का दानवीर, यज्ञ प्रेमी तथा आर्यसमाज के सम्मानीय महाशय धर्मपाल जी ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यसमाज को एक लाख एक हजार एक सौ एक रुपये दान भी दिए। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि जो बन सकेगा, सहयोग करता रहूंगा। इस अवसर पर यज्ञ आचार्य छविकृष्ण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ तथा मधुर भजन श्री नरेन्द्र वशिष्ठ के हुए।

दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार ने आर्यसमाज के महत्व, योगदान, विशेषताओं और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी को आह्वान किया कि इस समाज को आध्यात्म, योग, शान्ति, साधना, स्वाध्याय, सन्तोष और सामाजिक सेवा का केन्द्र बनाओ। उन्होंने अपनी ओर से 11 हजार रुपये का सहयोग भी आर्यसमाज को दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आर. के. सिंह ने की।

– विजेन्द्र सिंघल, प्रधान

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आचार्य वेदभूषण (हैदराबाद) के सानिध्य में लगने वाला एक मास का निःशुल्क **वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर** इस बार दिनांक 16 जून, 2009 से देहरादून स्थित मानव कल्याण केन्द्र, द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल में लगेगा। एक मास तक आवास, भोजन व प्रशिक्षण निःशुल्क होगा। इसका संयोजन अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, वेद मंदिर, हैदराबाद–500027, द्वारा किया जा रहा है। प्रवेश पाने के इच्छुक, अपना पूरा विवरण देते हुए निम्न पते पर प्रार्थना पत्र भेजकर पंजीकरण करा लें। पंजीकरण शुल्क 125/– मात्र मनिआर्डर से निम्न पते पर भेजें –

आचार्य वेद भूषण
अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान,
वेद मंदिर, महर्षि दयानन्द मार्ग,
हैदराबाद–500027 (आ.प्र.)

शिविर में स्त्री व पुरुष दोनो ही भाग ले सकते हैं जिनकी निवास व्यवस्था अलग–अलग होगी। प्रार्थी की आयु 18 वर्ष से 70 वर्ष तक होनी चाहिए।

– शिविर संयोजक

नैनीताल यात्रा का आयोजन

ग्रीष्मकालीन राजधानी, सुन्दरता की देवी, सरोवर नगरी नैनीताल (हिल स्टेशन 6358 फुट की ऊंचाई पर) आर्य बन्धुओं को झीलों की नगरी नैनीताल ले जाने हेतु 2×2 की एक लक्जरी बस की व्यवस्था की गई है। यात्रा कार्यक्रम इस प्रकार है :–

बस किराया : 1500/– रु. प्रति सवारी

प्रस्थान : 6 जून, 09 रात्रि 10 बजे आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव **12 जून रात्रि 8 बजे हरिद्वार से गुड़गांव।**

विशेष नोट :– हल्की ठंड होती है। गर्म वस्त्र, स्वेटर, शाल, कम्बल, बिस्तर व कपड़े के जूते साथ लाएं। अपनी सीट शीघ्र बुक करा लें। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। राशि जमा होने के बाद वापस नहीं होगी। कार्यक्रम में परिवर्तन एवं सीट नं. देने का अधिकार प्रबन्धक का होगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :–

मा. सोमनाथ, यात्रा प्रबन्धक
दूरभाष : 9811762364,
0124–2327344,2304873

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज गोविन्दपुरी
नई दिल्ली – 110019
प्रधान : श्री सोमदेव मल्होत्रा
मन्त्री : श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री संजय कथूरिया

आर्यसमाज सागरपुर
नई दिल्ली–110046
प्रधान : श्रीमती विद्यावती आर्या
मन्त्री : श्री राकेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यपाल सिंह आर्य

आर्यसमाज नांगलराया, न. दि.
प्रधान : श्री भगवानदास
मन्त्री : डॉ. जयदेव वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रतिपाल सिंह

आर्यसमाज रोहिणी सै.7 दिल्ली
प्रधान : श्री अश्विनी आर्य
मन्त्री : श्री नरेशपाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री देवराज आर्य

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार
दाल बाजार, लुधियाना (पंजाब)
प्रधान : श्री सन्त कुमार आर्य

आर्यसमाज मोलरबंद विस्तार एवं वैदिक योग सत्संग समिति द्वारा

निःशुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक दिव्य सत्संग

1 जून से 7 जून, 2009

योग शिविर : प्रातः 5 से 6.30 बजे
वेद कथा : नित्य सायं 5.30–9 बजे
कथा वाचक : पं. नरेशदत्त आर्योपदेशक
योग शिक्षक : आचार्य सत्यम गुप्ता एवं नरेश गुप्ता

समापन समारोह : रविवार 7 जून
आर्यजन भारी संख्या में पधारकर धर्म एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

– सतबीर सिंह, प्रधान
गजेन्द्र सिंह, मन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता– 2009

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सत्यार्थ प्रकाश को भूमण्डल में प्रसारित करने के उद्देश्य को लेकर श्रीमद् सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली निबन्ध प्रतियोगिता इस वर्ष भी आयोजित की जा रही है।

तर्क एवं सृष्टिक्रम की कसौटी पर बायबल

(सत्यार्थ प्रकाश के 13वें समुल्लास के आलोक में) :

प्रथम पुरस्कार 3100/– रुपये, द्वितीय पुरस्कार 2100/– रुपये, तृतीय पुरस्कार 1500/– रुपये एवं पांच सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक 100/– रुपये (लेखिका वर्ग में दो विशिष्ठ सान्त्वना पुरस्कार)।

–: प्रतियोगिता के नियम :–

1. प्रतियोगिता में किसी भी आयु के स्त्री–पुरुष भाग ले सकते हैं।
2. निबन्ध फुल स्केप कागज में लगभग पन्द्रह पृष्ठों में हो। निबन्ध आसानी से निर्णायकों द्वारा पढ़ा जा सके। इस हेतु टंकित हो तो अच्छा है।
3. निबन्ध की भाषा आर्य भाषा (हिन्दी) व लिपि देवनागरी होगी। अन्य भाषाओं में उद्धरण दिए जा सकेंगे।
4. निबन्ध लेखक/लेखिका अपना नाम, पता आदि अलग से एक कागज पर निबन्ध के साथ भेजेंगे। निबन्ध वाले पृष्ठों में कहीं भी उनका नाम/पहचान चिह्न हस्ताक्षर आदि नहीं होने चाहिए।
5. सत्यार्थ प्रकाश न्यास को निबन्ध प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई, 2009 होगी। तत्पश्चात् प्राप्त निबन्ध प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किए जाएंगे।

कई प्रतिभागियों ने हमें पत्र लिखें हैं कि वे अब तक के पुरस्कृत निबन्धों को देखने के इच्छुक हैं। उन्हें सूचित किया जाता है कि न्यास ने गत प्रतियोगिताओं में प्राप्त निबन्धों की सर्वश्रेष्ठ सामग्री का प्रकाशन सत्यार्थ दर्शन के नाम से तीन भागों में किया है। तीन भागों का मूल्य 75 रु. मात्र है। 75 रु. की राशि का धनादेश प्राप्त होने पर आपको तीनों भाग प्रेषित कर दिए जाएंगे।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.)

शोक समाचार

श्री मनोहर लाल कालरा का निधन

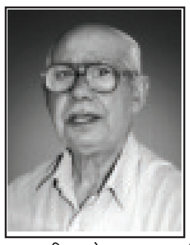

आर्यसमाज डी ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली के संरक्षक श्री मनोहर लाल कालरा जी का 85 वर्ष की आयु में 11 मई, 2009 को निधन हो गया। श्री कालरा जी का जन्म 1924 में मियांवाली जिले के आर्य परिवार में हुआ था। शादी के बाद वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा कालरा जी के साथ जहां अपना परिवार बसाया वहां दोनों ने अपना जीवन आर्यसमाज को समर्पित कर दिया।

श्री मनोहर लाल जी आर्यसमाज मोती बाग के वर्षों तक प्रधान रहे एवं उसके भवन निर्माण में सक्रिय सहयोग दिया। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा कालरा के साथ आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी के निर्माण में पूरा सहयोग दिया और अन्तिम समय तक आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लेते रहे।

उनकी स्मृति में शान्ति सभा 14 मई, 2009 को आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी में सम्पन्न हुई जिसमें आस–पास की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्री कालरा जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

स्व0श्री कालरा जी की स्मृति में कालरा परिवार ने विभिन्न संस्थाओं को 50 हजार रुपये की धनराशि का दान दिया तथा गुरु विरजानन्द धर्मार्थ औषधालय को एक मोबाइल किट घर में जाकर मैडिकल सुविधा देने के लिए समर्पित की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भी कालरा परिवार की ओर से उनकी स्मृति में 2000/– रुपये का चैक दानस्वरूप प्रदान किया गया।

श्री कालरा जी के जाने से उनके परिवार एवं आर्यसमाज की क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

25 मई, 2009 से 31 मई, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २८/२९-०५-२००९

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८

आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

अपने बच्चों को पढ़ाइए
महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र
आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० तक के इनाम

आज ही मंगवाएं

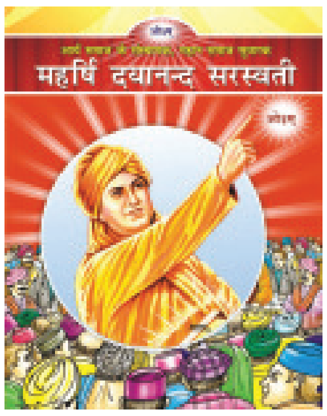

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई गई हैं। अन्य भाषाओं में भी इनका अनुवाद कराया जा रहा है। पढ़ने वाले समस्त बच्चों के लिए एक प्रश्न पत्र भी दिया गया है जिसके सही उत्तर देने वालों के लिए 5 लाख रुपये तक के विभिन्न पुरस्कार भी दिए जाएंगे। इनामों का विवरण तथा नियम कॉमिक्स में दिए गए हैं। मूल्य मात्र 12 रुपये प्रति कॉमिक्स। आज ही आर्डर करें। पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

नोट : आवश्यक नहीं कि प्रविष्टियां अलग-अलग भेजी जाएं। आप चाहें तो कई प्रविष्टियां एक साथ भेज सकते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की ऑडियो डीवीडी। सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली डीवीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। मात्र 15 रुपये में। डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक से देय होगा।

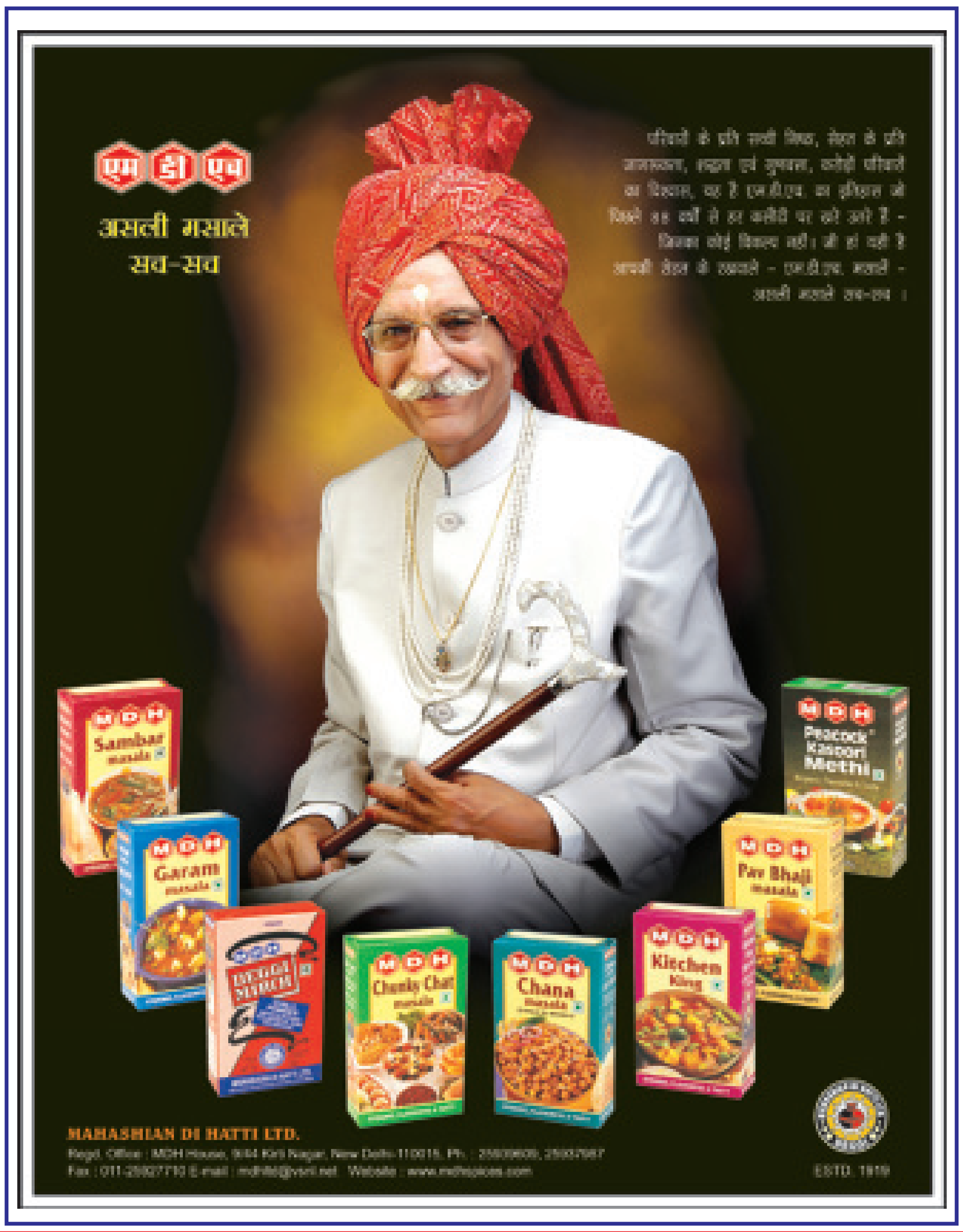

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर